

विशिष्ट सारांश

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा.कृ.सां.अ.सं.) की स्थापना सन् 1959 में कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के रूप में हुई तभी से यह संस्थान कृषि सांख्यिकी में अनुसंधान के साथ-साथ शिक्षण/प्रशिक्षण करने का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही प्रगति के दृष्टिगत इस संस्थान ने स्वयं को कृषि अनुसंधान की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। इस परिवर्तित परिवेश में, संस्थान को सौंपे गये कार्य हैं - सांख्यिकी में मौलिक, अनुप्रयुक्त और अनुकूली शोध करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में स्नातकोत्तर एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाना, परामर्श सेवाएँ प्रदान करना, अनुसंधान हेतु कृषि सांख्यिकी में सूचना कोष के रूप में कार्य करना, कृषि सांख्यिकी एवं संगणक अनुप्रयोग में श्रेष्ठ शिक्षा व प्रशिक्षण के एक उन्नत केन्द्र के रूप में संस्थान को विकसित करना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अन्य संस्थानों एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (रा.कृ.वि.), राज्य कृषि/पशुपालन विभागों के साथ सम्पर्क बढ़ाना, राष्ट्रीय कृषि सांख्यिकी प्रणाली को विकसित करने एवं सुदृढ़ बनाने में सहायता करना तथा इन विषयों में राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के द्वारा प्रायोजित अनुसंधान करना और प्रशिक्षण प्रदान करना।

इस वर्ष संस्थान के विभिन्न प्रभागों - प्रतिदर्श सर्वेक्षण, परीक्षण अभिकल्पना, जैवमिति, पूर्वानुमान तकनीक, अर्थमिति एवं संगणक अनुप्रयोग में अनेक अनुसंधान परियोजनाएँ चलाई गईं। संस्थान में विभिन्न महत्व वाले क्षेत्रों में कुल 53 अनुसंधान परियोजनाओं के अन्तर्गत अनुसंधान कार्य किया गया जिनमें से 35 परियोजनाएँ संस्थान द्वारा, 08 ए.पी. सेस फ़ण्ड द्वारा तथा 09 बाह्य एजेन्सियों द्वारा वित्त पोषित और एक परियोजना अन्य संस्थान के सहयोग से चलाई गई। इस वर्ष कुल 13 परियोजनाएँ पूरी हो चुकी हैं तथा 28 नयी परियोजनाएँ आरम्भ की गईं हैं।

कुछ प्रमुख अनुसंधानिक उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:-

- क्वालिटी कृषि अनुसंधान के लिए प्रभावी परीक्षण की अभिकल्पनाओं हेतु खोज से कॉलम-वार समन्वित विनिमय एलगोरिथम का उपयोग करते हुए दो स्तरीय कारक सुपर सैचुरेटेड अभिकल्पनाओं (SSD) का विकास किया गया।

यह एलगोरिथम दो स्थितियों के लिए अभिकल्पनाओं का विकास करता है: (अ) n (सम संख्या) रन अभिकल्पना के लिए जब सभी कारकों के लिए +1 तथा -1 स्तर $n/2$ गुणा होते हैं, तब अभिकल्पना को संतुलित किया जाता है (ब) अभिकल्पना को संतुलित किया जाता है और वहां कारकों के सबसेट होते हैं जो कि आपस में इस प्रकार सम्बद्ध होते हैं कि इस सबसेट में किसी भी दो कॉलम का आन्तरिक उत्पाद शून्य हो जाता है, जबकि $n, 4$ का गुणन है। प्रभावी अभिकल्पनाओं के कैटलॉग अभिकल्पना संसाधन सर्वर (www.iasri.res.in/design) पर उपलब्ध है। इन अभिकल्पनाओं के लिए असंतुलित मिश्रण-स्तर कारक SSDs की अवधारणा की शुरुआत की गयी है तथा प्रभावी दक्षता मानकों में सुधार किया गया। इन प्रभावी दक्षता मानकों की निम्न सीमा प्राप्त की गयी।

- पूर्ण बहु-अनुक्रिया परीक्षणों के लिए यह देखा गया कि जो अभिकल्पना एकल अनुक्रिया परीक्षणों के लिए प्रभावी थी वही, बहु अनुक्रिया परीक्षणों को पूरा करने के लिए भी प्रभावी थी जबकि अनुक्रिया चरों की संख्या, स्वतंत्र रूप से की गई त्रुटियों से कम हो।
- यादृच्छिक पूर्ण ब्लॉक अभिकल्पनाओं (RCB) एवं संतुलित अपूर्ण ब्लॉक अभिकल्पनाओं (BIB)के संयोजन का प्रयोग करते हुए अपूर्ण बहु-अनुक्रिया परीक्षणों के लिए अभिकल्पनाओं का विकास करने के लिए विधि तैयार की गई। इस तरीके से प्राप्त अभिकल्पनाएं संसाधनों की दृष्टि से मितव्ययी है।
- यादृच्छिक पूर्ण ब्लॉक अभिकल्पनाओं एवं संतुलित अपूर्ण ब्लॉक अभिकल्पनाओं के संयोजन से प्राप्त अपूर्ण बहु-अनुक्रिया अभिकल्पनाओं के विश्लेषण की एक पदशः विश्लेषण विधि विकसित की गई।
- NN तथा AR(1) त्रुटि संरचनाओं में सहसंबंध गुणांक के विभिन्न मानों के लिए सह सहसंबंधित ऑब्जर्वेशन के विरुद्ध चक्रीय अभिकल्पनाओं में रॉबस्टनेस का अध्ययन किया गया तथा इन अभिकल्पनाओं की एक सूची तैयार की गई जबकि उपचारों की संख्या 10 से ज्यादा न हो तथा A- दक्षता दी गई हो।

- जैव समानता ट्रायल में संदर्भ निरूपण में एक अन्य सेट के साथ परीक्षण निरूपण की तुलना करने के लिए पुनरावृत्ति उपाय डिजाइनों की श्रृंखला प्राप्त की गई और पुनरावृत्ति उपाय डिजाइनों के लिए एक सांख्यिकीय पैकेज (SPRMD) का विकास किया गया।
- एक से अधिक आउटलाईंग प्रसरण की उपस्थिति में रॉबस्ट डिजाइन की पहचान हेतु एक नया तरीका विकसित किया गया। इस तरीके का इस्तेमाल करते हुए दो आउटलाईंग प्रसरण की उपस्थिति में सभी द्विधारी प्रसरण संतुलित ब्लॉक डिजाइन रॉबस्ट पाई गई। आउटलाईंग प्रसरण की उपस्थिति में परीक्षण आंकड़ों के विश्लेषण हेतु ग्राफिक उपयोग इंटरफेस आधारित सॉफ्टवेयर विकसित किया गया।
- मिश्रित परिक्षणों में, ट्रेस $(X'X)^{-1}$ (A- दक्षता कसौटी), न्यूनतम $|(X'X)^{-1}|$ (D- दक्षता कसौटी) एवं G- दक्षता (G- के लिए वैश्विक) कसौटी के मापदण्डों को न्यूनतम करके दक्ष अभिकल्पनाओं को प्राप्त किया गया।
- समानान्तर पंक्ति और ढलाव दर विश्लेषण के लिए ब्लॉक डिजाइन रॉबस्टनेस के दो तरीके विकसित किए गए पहला तरीका जहां गुणों से संपर्क आधारित था वहीं दूसरा तरीका मूल डिजाइन के आकलन से हटाए जाने के पश्चात प्राप्त अवशेष डिजाइन की एक-प्रभावशीलता पर आधारित था। आंकड़ों के नुकसान में बायोएसे के रॉबस्ट डिजाइन को भी सूचीबद्ध किया गया।
- समान प्रवृत्ति वाले क्रमगुणित परीक्षणों के लिए दो गैर पारस्परिक कारकों के साथ उपचारों के क्रम को शामिल करते हुए एक डिजाइन श्रृंखला प्राप्त की गई। उक्त डिजाइनें परिपत्र एसोसिएशन स्कीम पर आधारित प्रत्येक कारक के स्तर के लिए आंशिक रूप से परिवर्ती रूप से संतुलित थीं।
- वर्षा वितरण की सर्व-बहुलकता और द्वि-बहुलकता के चरित्रांकन के लिए यह निष्कर्ष निकला कि सर्व-बहुलकता वर्षा डेटा सेट के लिए सामान्यीकृत लैम्बडा वितरण (GLD) परिवार का इस्तेमाल किया जाए जबकि दूसरी ओर द्वि-बहुलकता डाटा सेट के लिए वर्षा वितरण का वर्णन वितरण सम्मिश्रण द्वारा किया जा सकता है।
- बागवानी फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन का आकलन करने के लिए एक वैकल्पिक प्रणाली विकसित की गई जिसमें बाजार पहुंचने पर सब्जियों और फलीय फसलों तथा उपयोग की गई अतिरिक्त सूचना इत्यादि के लिए एकीकृत डिजाइन का प्रावधान है। नई प्रणाली लागत प्रभावी है एवं विधियाँ सरलीकृत हैं।
- स्थानों के विभिन्न सबसेट के लिए जीनप्ररूपों के सबसेट की पहचान हेतु बाईप्लॉट विश्लेषण किया गया।
- स्टेट स्पेस मॉडल्स का इस्तेमाल करते हुए फसल पूर्वानुमान के लिए लीनियर गॉसीयन, स्टेट स्पेस और बैक्टर ऑटो रिग्रेशन (VAR) जैसे बाईवेरिएट टाइम सीरिज मॉडलों की फिटिंग की गई। इन मॉडलों का अनुप्रयोग करते हुए अनुवर्ती वर्षों के लिए पूर्वानुमान किए गए और इनकी तुलना इनके सादृश्य गैर-वेरिएट मॉडलों यथा ARIMA और स्टेट स्पेस मॉडलों से किए गए पूर्वानुमानों से की गई। राज्य स्तर पर VAR मॉडल का उपयोग करते हुए प्राप्त किये गये कपास उत्पादन पूर्वानुमान अन्य मॉडलों के उपयोग द्वारा पाए गए पूर्वानुमान की तुलना में कहीं बेहतर थे।
- चावल, गेहूं और गन्ने की उपज के पूर्वानुमान के लिए बहुस्तरीय पर्सेट्रॉन (MLP), रेडियल आधारित कार्य (RBF) आर्कीटैक्चर तथा मौसम आधारित परावर्तन मॉडल का इस्तेमाल करते हुए न्यूरल नेटवर्क मॉडल विकसित किए गए और उनमें से 36 मॉडल स्थापित किए गए। यह पाया गया कि 13 मामलों में MLP आर्कीटैक्चर आधारित मॉडल कहीं बेहतर थे जबकि 6 मामलों में RBF आर्कीटैक्चर आधारित मॉडल एवं 17 मामलों में मौसम आधारित परावर्तन मॉडल कहीं बेहतर पाए गए।
- न्यूरल नेटवर्क का उपयोग करते हुए संपादन एवं वर्गीकरण पर किए गए अध्ययन से यह पता चला कि गैर अनुक्रिया संपादन के लिए ANN मॉडल अधिक उपयुक्त पाये गए।
- खेत किफायत पर संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों (RCT) के अनुकूलन और प्रभाव पर किए गए अध्ययन से यह पता चला कि RCT के उपयोग से भारत के इन्डो-गंगोटिक मैदानों में विभिन्न राज्यों में चावल तथा गेहूं उगाने वाले किसानों की कुल आमदनी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- भारत में मात्स्यकीय अनुसंधान के प्रभावी मूल्यांकन के तहत यह पाया गया कि कुल नियत पूंजी निर्माण (ग्रॉस फिक्सड कैपिटल फार्मेशन) (GFCF) के साथ-साथ कृषि GFCF

के क्षेत्र में मात्स्यकी का हिस्सा 80 के दशक के उपरांत निश्चित मूल्यों के साथ संतुलित गति से बढ़ रहा था। 70 के दशक के अंतिम वर्षों में मत्स्य समग्र घरेलू उत्पाद (GDP) में हुई बहुत कम वृद्धि के कारण मत्स्यकीय क्षेत्र में संवृद्धि पूंजी परिणाम दर (इंक्रिमेंटल कैपिटल आउट-पुट रेशो-ICOR) बहुत अधिक थी तथा इसमें 80 के दशक में प्रभावी GDP वृद्धि के कारण निचले स्तर तक हास हुआ। 90 के दशक के अंतिम वर्षों में विशेषकर समुद्रीय उत्पादन में ठहराव के कारण GDP में धीमी बढ़ती वृद्धि की वजह से ICOR में अधिक वृद्धि हुई।

- स्थायी एवं रॉबस्ट गुच्छ प्रक्रियाओं पर किए गए एक अध्ययन से यह देखा गया कि गुच्छ विधियों और दूरी माप के विभिन्न संयोजनों के प्रति अपवर्गीकरण की बारंबारता निम्न पायी गयी।
- दीर्घावधि उर्वरक परीक्षणों से कोयम्बटूर, लुधियाना और पंतनगर केन्द्रों को छोड़कर अधिकतर केन्द्रों पर मिट्टी में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों के लगातार उपयोग से फसल पैदावार में कमी देखी गयी। पालमपुर, रांची और बंगलुरु में अम्लीय मृदा में अकेले नाइट्रोजन का उपयोग करने से फसल पैदावार में होने वाली वृद्धि कहीं ज्यादा थी।
- NPK के संतुलित अधिकतम अनुप्रयोग के निर्धारण के लिए सघन परीक्षणों से यह देखने में आया कि जैविक खाद FYM @ 10-15 टन प्रति है। प्रति वर्ष के साथ 100 प्रतिशत NPK अजैविक (अधिकतम खुराक) के एकीकृत अनुप्रयोग से टिकाऊ फसल उत्पादकता और मृदा उर्वरकता में बढ़ती हुई। इन निष्कर्षों की पुष्टि वर्ष के दौरान किए गए उनके संबंधित पैदावार टिकाऊ आंकड़ों से की गई। FYM के अनुप्रयोग से NPK की अतिरिक्त मात्रा की आपूर्ति के अलावा इसका मृदा गुणों पर लाभदायक प्रभाव पड़ा।
- दाना पैदावार और सहायी गुणों के बीच परावर्तन विश्लेषण से यह पता चला कि पौधों की ऊंचाई का दानों की पैदावार में कोई उल्लेखनीय योगदान नहीं था जबकि प्रति गुच्छ दानों की संख्या और डंठल/एस.यू. वाली बालियों की संख्या का योगदान दाना पैदावार में उल्लेखनीय था।
- विभिन्न कृषि पारिस्थितिकी प्रणाली में फसल अनुक्रमण के उत्पादन का आर्थिकी और ऊर्जा क्षमता पर की गई सांख्यिकीय जांच से यह निष्कर्ष निकला कि 3 फसल अनुक्रमण जिसमें

एक फसल के रूप में प्याज भी शामिल है, को बाजरा-प्याज-लोबिया तथा सोयाबीन-प्याज-लोबिया जैसे फसल चक्र की तरह CSR, जूनागढ़ पर प्रयोग किया जा सकता है। इससे न केवल किसानों की कुल आमदनी में बढ़ती होगी वरन् इससे कार्बोहाइड्रेट और आयरन शक्ति समृद्ध प्याज के साथ अनाजों, दलहन और तिलहन की प्राप्ति होगी। इन अनुक्रमणों से भूमि उपयोग प्रभावशीलता भी अधिकतम पाई गई।

- एक बेव सामर्थ्य कृषि खेत परीक्षण सूचना प्रणाली (AFEIS) का विकास किया गया जिसमें देश में आयोजित कृषि क्षेत्र के परीक्षणों (शुद्ध किस्मिय परीक्षणों को छोड़कर) से संबंधित जानकारी भंडारित की जाती है और इसका ऑन लाईन रखरखाव किया जाता है। यह प्रणाली कृषि विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं एवं योजनाकारों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में प्रभावी है। वर्तमान में उक्त डॉटाबेस में विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् अनुसंधान संस्थानों, परियोजना निदेशालयों, अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं और राज्य सरकारों के कृषि निदेशालयों आदि में आयोजित 24,000 कृषि खेत परीक्षणों से संबंधित जानकारी समाहित है।
- स्वतंत्र त्रुटियों और पारस्परिक त्रुटियों दोनों के लिए नेस्टेड ब्लॉक डिजाइन के सृजन हेतु एक वीटावर्जन सॉफ्टवेयर विकसित किया गया।
- भारत में कृषि शिक्षा नेटवर्क पर राष्ट्रीय सूचना प्रणाली (NISAGENET) विकसित की गई और इसका क्रियान्वयन 42 प्रतिभागी संगठनों में किया गया जिनमें कि भारत में कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने वाले राज्य कृषि विश्वविद्यालय, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् मानद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद कृषि संस्थान, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय और केन्द्रीय विश्वविद्यालय शामिल हैं।
- सर्वे डॉटा विश्लेषण के लिए सॉफ्टवेयर (SSDA) विकसित किया गया। इस सॉफ्टवेयर से साधारण यादृच्छिक, स्ट्रेटिफाइड, प्रणालीगत, गुच्छ, द्विस्तरीय तथा स्ट्रेटिफाइड द्विस्तरीय जैसे महत्वपूर्ण सामान्य प्रतिदर्श अभिकल्पनाओं का उपयोग करते हुए एकत्रित किए गए नमूना आंकड़ों पर जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर जनसंख्या पैरामीटर्स का आकलन किया जाता है।

- वर्तमान परमिसनेट को .NET प्लेटफार्म तक उन्नत किया गया और इसे न्यू मॉड्यूल और मानवशक्ति योजना रिपोर्ट के साथ सुदृढ़ किया गया। RMP (अनुसंधान प्रबंधन कार्मिक) मॉड्यूल पहुंच योग्य अधिकारों में सुधार तथा उन्नत निर्णय सहयोग के लिए नए फार्म एवं रिपोर्ट जैसे बहुत से नए गुणों के साथ प्रणाली को समृद्ध बनाया गया।
- पशु प्रजनन हेतु सांख्यिकीय पैकेज 2.1 (SPAB 2.1) की पहल की गयी तथा पैकेज के आठ कार्यक्रम विकसित किए गए।
- “मानवशक्ति योजना-परमिसनेट हेतु निर्णय समर्थित प्रणाली” की शुरूआत की गयी। आन-लाइन परमिसनेट प्रणाली के आंकड़ों को परमिसनेट-॥ प्रणाली के नये डॉटाबेस ढांचे में मिलाया गया। मानवशक्ति योजना हेतु कुछ नवीन रिपोर्टें विकसित की गयीं तथा उन्हें परमिसनेट-॥ प्रणाली के साथ एकीकृत किया गया।
- “आंशिक रूप से संतुलित अपूर्ण ब्लॉक डिजाइन (PBIB) हेतु बेव समाधान” की पहल की गयी। PBIB डिजाइन की कुछ श्रेणियों के निर्माण के तरीकों का मिलान उपलब्ध साहित्य से किया गया। इन डिजाइनों की यादृच्छिक स्थापना के सृजन हेतु कम्प्यूटर मॉड्यूल विकसित किया गया। PBIB डिजाइनों पर ई-लर्निंग सामग्री की अभिकल्पना की शुरूआत की गयी।
- “कृषि अनुसंधान के लिए सूचना डॉटा वेअर हाउस” की शुरूआत की गयी। कुछ राज्यों के लिए जनगणना सर्वेक्षण डॉटा (2001) हेतु OLAP क्यूबस तैयार किए गए।
- NRC on R&M, भरतपुर तथा DWR, करनाल से IVT डॉटा का विश्लेषण परीक्षण सामग्री में विसंगति नियंत्रण में अघुलनशील अपूर्ण ब्लॉक डिजाइन की उपयोगिता की जांच के लिए किया गया।
- α -डिजाइन, बायोएसे के लिए डिजाइन, सुपर-संतुप्त डिजाइन जैसे स्कवेयर लैटिस डिजाइनों के यादृच्छिक विन्यास को उत्पन्न करने के लिए मॉड्यूल, मूल डिजाइन जैसे पूर्ण यादृच्छिक डिजाइन, RCB डिजाइन, लेटिन स्कवेयर डिजाइन तथा प्रवधि डिजाइन पर संपर्क द्वारा डिजाइन संसाधन सर्वर का सुदृढ़ीकरण किया गया। डिजाइन संसाधन सर्वर पर सृजित किए “डॉटा आकलन” के नए पेज से SAS तथा

SPSS का इस्तेमाल करते हुए अभिकल्पित परीक्षणों द्वारा सृजित डॉटा का आकलन प्राप्त किया जा सकता है। वैज्ञानिक समुदाय के ध्यानाकर्षण हेतु वर्तमान ज्वलंत मुद्दों पर विश्व स्तर पर वैज्ञानिकों के अनुसंधान अनुभव बांटने के लिए एक विचार पटल की शुरूआत की गयी। परीक्षण डिजाइन में विश्व स्तर पर विशेषज्ञों की सूची प्रस्तुत की गयी है जो कि संपर्क स्थापित करने में सहायक होगी।

- संपूर्ण मेघालय राज्य में धान की फसल के क्षेत्र का आकलन करने के लिए संस्थान द्वारा विकसित कार्यप्रणाली को क्रियान्वित किया गया और उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र में कृषि सांख्यिकी आंकड़ों के एकीकरण हेतु सुदूर संवेदन आधारित पद्धति विकसित करने के लिए बहुफसल क्षेत्रफल हेतु सुदूरसंवेदन आधारित नमूना कार्यप्रणाली के विकास की पहल की गई।
- कपास उत्पादन के सरकारी एवं ट्रेड आकलनों में विभिन्नता के कारणों की जांच हेतु तथा कार्य प्रणाली विकास के लिए फसल कटाई परीक्षणों से संबंधित आंकड़ों का पुनः विश्लेषण किया गया।
- “ऊर्जा उपयोग के साथ खेत अभ्यासों, संसाधनों और गतिविधियों की सीमा का आकलन” शीर्षक पर एक अध्ययन प्रारंभ किया गया।
- मशरूम उत्पादन के आकलन हेतु प्रतिदर्श कार्यप्रणाली को विकसित करने हेतु अध्ययन की शुरूआत की गई।
- कृषि उपकरणों एवं मशीनरी की दशा एवं परिलक्षित आंकलन पर अध्ययन प्रारंभ किया गया।
- गेहूं फसल प्रबंधन पर विशेषज्ञ प्रणाली को सुदृढ़, परिष्कृत एवं क्रियान्वित करने की पहल की गई। इनमें से कुछ को हिन्दी में तैयार किया गया।
- भारत में कृषि शिक्षा नेटवर्क पर राष्ट्रीय सूचना प्रणाली (NISAGENET II) की शुरूआत की गई।
- संस्थान, वर्ष 1996 से कृषि अनुसंधान डॉटा पुस्तकों के प्रकाशन में अग्रणी बना हुआ है। कृषि अनुसंधान डॉटा पुस्तक-2007 प्रकाशित की गई जोकि इस श्रृंखला की 11वीं कड़ी थी।

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के जर्नलों में कुल 67 शोधपत्र, 07 सारांश, 10 लोकप्रिय लेख, 03 पुस्तक

अध्याय, 13 परियोजना एवं तकनीकी रिपोर्टें, 02 मोनोग्राफ, 01 ई-मैनुअल, 01 पाठ श्रृंखला तथा एक संगोष्ठी विवरण प्रकाशित किए गए।

वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रशासनिक वर्ग के साथ QRT की बहुत सी बैठकों का आयोजन किया गया। IMC के सदस्यों से फीडबैक प्राप्त करने हेतु QRT, IMC के सदस्यों से भी मिली। अंततः परिषद् के महानिदेशक के परामर्श पर QRT अध्यक्ष ने अपनी रिपोर्ट संस्थान के निदेशक को सौंपी।

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान तथा कृषि अर्थशास्त्र एवं नीति अनुसंधान के राष्ट्रीय केन्द्र की सामूहिक अनुसंधान परामर्श समिति की पहली बैठक डॉ. पी.वी. शिर्नॉय, पूर्व विशेष सचिव, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राष्ट्रीय अध्येता को NAAS एसोसिएटशिप प्रदान की गई।

डॉ. सिनी वर्गीज, वरिष्ठ वैज्ञानिक को सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में 2005-06 का द्विवार्षिक लाल बहादुर शास्त्री युवा वैज्ञानिक पुरस्कार मिला।

डॉ. पी. विशाखी, लाइब्रेरियन को सूचना विज्ञान के लिए सोसायटी (SIS) द्वारा “2006 के लिए युवा सूचना वैज्ञानिक” प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किया गया।

संस्थान के बहुत से वैज्ञानिकों को अनेकों राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अपने शोध पत्रों के प्रस्तुतिकरण के लिए भेजा गया।

डॉ. प्रजनेशु, अध्यक्ष, जैवमिति ने 12-14 अक्टूबर 2007 के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका के ग्रीन्सबोरो में आयोजित अन्तर विषयी सांख्यिकी में प्रगति पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

डॉ. वी. के. भाटिया, प्राध्यापक (कृषि सांख्यिकी) तथा प्रभारी (RCMU) ने बीजिंग, चीन में 22-24 अक्टूबर 2007 के दौरान आयोजित कृषि सांख्यिकी के चौथे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

डॉ. सुशीला कौल, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 12-14 सितंबर 2007 के दौरान मास्को में आयोजित आर्थिक मॉडलिंग सम्मेलन तथा 22-25 अक्टूबर 2007 के दौरान विक्टोरिया, बी.सी. कनाडा में आयोजित सामाजिक आर्थिकी पर प्रथम CIREC अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिए संस्थान में एक शोधपत्र पोस्टर प्रस्तुति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें हिन्दी पोस्टर तैयार करने में उल्लेखनीय योगदान देने वाले वैज्ञानिकों को पुरस्कृत किया गया।

संस्थान द्वारा 03-04 दिसंबर 2007 के दौरान बिरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची में भा.कृ.अ.प. के कृषि अनुसंधान सांख्यिकीविदों के 15वें राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

NISAGENET के लिए विकसित सॉफ्टवेयर के स्थापन और क्रियान्वयन के लिए संस्थान द्वारा दो दिवसीय कार्यस्थल प्रशिक्षण का आयोजन किया गया और सभी 42 प्रतिभागी संगठनों में LAN पर सॉफ्टवेयर को कार्यशील किया गया।

परमिसनेट तथा भा.कृ.अ.प. की बौद्धिक रिपोर्टिंग प्रणाली पर एक दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

स्थानिक तथा गैर स्थानिक सूचना प्रबंध और कृषि में माइनिंग, कृषि अर्थमिति में नीति विश्लेषण हेतु मात्रात्मक तकनीकों में प्रगति, कृषि में जानकारी प्रसार के लिए बेव अनुप्रयोग की जैवमिति तकनीकों और विकास में प्रगति पर प्रगत अध्ययन केन्द्र के तहत 21 दिवसीय चार प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

संस्थान द्वारा अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों के लिए 31 अक्टूबर 2007 को “कार्यालयीन सांख्यिकी एवं संबंधित कार्य प्रणाली” विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया।

अफगानिस्तान के वरिष्ठ प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम के दो प्रतिभागियों के लिए अध्ययन दौरा आयोजित किया गया।

10-29 दिसंबर 2007 के दौरान FAO द्वारा प्रायोजित अफगानिस्तान के प्रतिभागियों का अध्ययन दौरा आयोजित किया गया। अध्ययन दौरे में प्रतिभागियों को 16-19 दिसंबर 2007 के दौरान DES, त्रिवेन्द्रम् तथा 25-27 दिसंबर 2007 के दौरान DES, हैदराबाद ले जाया गया।

संस्थान द्वारा 16 जनवरी से 05 फरवरी 2008 के दौरान “कृषि अनुसंधान में नमूना सर्वेक्षण तकनीक” विषय पर शीतकालीन स्कूल का आयोजन किया गया।

“अनुसंधान कार्य प्रणाली” पर 07-18 जनवरी 2008 के दौरान भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के वैज्ञानिकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

संस्थान की शिक्षण एवं प्रशिक्षण से सम्बन्धित गतिविधियां, जिनमें

समस्त स्नातकोत्तर अध्यापन कार्यक्रमों का नियोजन, आयोजन एवं समन्वयन सम्मिलित है, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के पी.जी. स्कूल के सहयोग से चलायी गयीं। इस वर्ष कुल 19 छात्रों {07 पी.एच.डी. (कृषि सांख्यिकी), 05 एम.एस.सी. (कृषि सांख्यिकी) एवं 07 एम.एस.सी. (संगणक अनुप्रयोग)} ने अपना डिग्री पाठ्यक्रम पूरा किया। 12 नए छात्रों {03 पी.एच.डी. (कृषि सांख्यिकी), 05 एम.एस.सी. (कृषि सांख्यिकी) एवं 04 एम.एस.सी. (संगणक अनुप्रयोग)} को प्रवेश दिया गया।

भारत एवं सार्क देशों सहित विदेश के अनुसंधान संस्थानों/विश्वविद्यालयों में सांख्यिकीय आँकड़ों के संकलन, विश्लेषण एवं विवेचना के कार्य में लगे शोधकर्ताओं के लाभार्थ 'कृषि

सांख्यिकी एवं संगणन' में एक उच्च प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम में 08 अधिकारियों ने सहभागिता की।

संस्थान का पुस्तकालय राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (NARS) के अन्तर्गत देश का एक क्षेत्रीय पुस्तकालय है जो संस्थान के प्रयोक्ताओं के साथ-साथ अन्य अनुसंधान संगठनों के प्रयोक्ताओं की सूचना सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पुस्तकालय की सेवाओं को पूरी तरह से डिजिटाइज्ड कर दिया गया है जो पुस्तकालय की वेबसाइट (<http://lib.iasri.res.in>) पर उपलब्ध है। इस पुस्तकालय में उपलब्ध सभी संसाधनों और सेवाओं के लिंक दिये गये हैं।